डॉ. संदीप कुमार सिंह
गुलावठी, बुलंदशहर (उ0प्र0) मो. 9456814243

व्यंग्य

कालेज की पुताई

"मैं सोचता हूँ, अतः मैं हूँ।" पाश्चात्य दार्शनिक रेने डेकार्त ने जब स्थापना दी तो दर्शन जगत में क्रांति आ गयी। डेकार्त की उक्ति का अर्थ था कि सोचने से ही मनुष्य का अस्तित्व है। इसका मतलब यह भी हुआ कि जो सोचता नहीं है, वह मनुष्य कहलाने लायक भी नहीं होता। जिस प्रकार दाना, पानी और हवा के बिना ज़िंदगी संभव नहीं है, उसी प्रकार सोचने के बिना भी जिंदगी संभव नहीं है।

सभी जीव कुछ न कुछ सोचते रहते हैं, इन जीवों में बड़का जीव कुछ ज्यादा ही सोचता है। संस्था का मुखिया होने के नाते प्रधानाचार्य अपने को बड़का जीव में भी और बड़का जीव मानते हैं। इसीलिए वे मानते हैं कि उन्हें अधिक से अधिक सोचना चाहिए। इसी ज़िम्मेदारी को निभाने के नाते प्रधानाचार्य कालेज की बेहतरी के लिए लगातार कुछ न कुछ सोचते रहते थे।

पिछले दस सालों से कालेज की पुताई नहीं हुई थी। इन दस सालों में प्रधानाचार्य के मन में शायद ही कोई ऐसा दिन रहा हो जब उन्होंने कालेज की पुताई करवाने के बारे में सोचा न हो। लेकिन, हर बार कोई न कोई ऐसा व्यवधान आ जाता कि उनके विचार कार्य में तब्दील नहीं हो पा रहे थे। वे अपनी सोच को अमली जामा नहीं पहना पा रहे थे।

अबकी बार प्रधानाचार्य ने पक्का मन बना लिया कि कुछ भी हो जाए, कालेज की पुताई करवाकर रहूँगा। उन्होंने अपने विचारों को कार्य में बदलने के लिए सभी शिक्षकों एवं बाबुओं की पंचायत बुलाई। उनका लोकतंत्र में दृढ़ विश्वास था इसलिए कोई भी काम सभी की सहमति से करते थे।

"आप सभी को पता ही है कि पिछले दस सालों से कालेज की पुताई नहीं हुई है। मेरा विचार है कि कालेज की पुताई करा दी जाए।" प्रधानाचार्य के इतना कहते ही कुछ शिक्षकों में होड़-सी लग गई कि कौन सबसे पहले उन्हें धन्यवाद दे। वे अपने आपको सिद्ध करने में लग गए कि कभी प्रधानाचार्य जी हुजूरी का गोल्ड मेडल दें तो उनकी झोली में गिरे।

"साहब, मैं तो कई महीनों से इस बारे में आपसे कहना चाहता था कि कालेज की पुताई करवा दी जाए लेकिन कह नहीं पाया।" राठौर जी ने प्रधानाचार्य की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा।

"साहब मैं तो आज ही कहने वाला था कि कालेज की पुताई करवा दीजिए। कालेज बहुत गंदा दिखता है।" लुकमान अली ने भी प्रधानाचार्य को खुश करने के लिए कहा।

और भी कई शिक्षकों ने प्रधानाचार्य की हाँ में हाँ मिलाई। लगभग तय हो गया कि अबकी बार कालेज की पुताई हो ही जाएगी, तभी प्रधानाचार्य ने सभी से पूछा कि कालेज की पुताई किस रंग से करवाई जाए? कुछ शिक्षकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

"सर, कालेज की पुताई सफेद रंग से करवाना चाहिए। सफेद रंग सादगी का प्रतीक है। विद्या की देवी माँ सरस्वती के कपड़ों का रंग भी सफेद है। इस रंग में कालेज चमकने लगेगा।" मानित जी ने सुझाव दिया।

"कालेज चमकने लगेगा! वह तो ठीक है, पर कितने दिन के लिए? सफेद रंग बहुत जल्दी गंदा दिखने लगता है। कोई ऐसा रंग बताइए जो गंदा न दिखे और जिसे देखते ही लोग वाह! वाह! करने लगें।" प्रधानाचार्य ने कहा।

राघव जी प्रधानाचार्य की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा,"आप सही कह रहे हैं, सर। सफेद रंग बहुत जल्दी

गंदा दिखने लगता है। सफेद रंग से पुताई नहीं होना चाहिए।"

"गुलाबी रंग से पुतवाना चाहिए। यह रंग बहुत सुंदर दिखाई देता है। जयपुर गुलाबी रंग की वजह से इतना प्रसिद्ध है। लोग देखते ही कहने लगेंगे कि गोया ये कोई स्कूल नहीं, जयपुर की कोई इमारत है" ओमकार जी ने सुझाव दिया।

"गुलाबी रंग लड़कियों को ज्यादा पसंद होता है। हमारे कालेज में तो केवल लड़के पढ़ते हैं। यह रंग भी लड़कों के हिसाब से सही जंच नहीं रहा।" प्रधानाचार्य ने कहा।

"लाल रंग से पुतवा दीजिए। लाल रंग खतरे का निशान है। यह रंग हमारे कालेज के हिसाब से बहुत अच्छा रहेगा।" घटनाक्रम का मजा लेते हुए सुरेंद्र जी ने कहा।

"लाल रंग से नहीं, काले रंग से पुतवा दें! आज तक कोई कालेज लाल रंग से पुता देखा तुमने!" थोड़ा रोष व्यक्त करते हुए प्रधानाचार्य ने कहा।

अभी कालेज की पुताई के रंग को लेकर चर्चा चल ही रही थी कि अचानक प्रधानाचार्य को कालेज की पुताई में होने वाले खर्च की याद आ गई। उन्होंने कहा कि कल पहले खर्च के बारे में पता किया जाए। रंग तो उसी समय डिसाइड कर लेंगे। प्रधानाचार्य ने सभी को पुताई करने वालों की खोजबीन लगा दिया। काफी मशक्कत के बाद खोजबीन में रईस मिला, उसे कल कालेज आने के लिए कह दिया गया।

अगले दिन रईस कालेज आया और फिर से पंचायत बुलाई गई। प्रधानाचार्य ने रईस से पुताई में खर्च के बारे में पूछा। रईस ने कालेज पुताई का खर्च पाँच लाख रुपए बताया।

"पाँच लाख रुपए! पाँच लाख तो बहुत हैं।" प्रधानाचार्य आश्चर्यचकित होकर बोले।

"साहब! इसमें पुताई का माल और हमार मजूरी है। तुम माल ख़रीद के हमका दै देव और केवल हमार मजूरी दै देहवे।"

"तुम्हारी मजदूरी कितनी होगी?"

"हमार मजूरी एक लाख बैठी।"

"अच्छा! एक लाख मजदूरी! यह बताओ, तुम्हें पुताई करनी है या नहीं।"

"साहेब, अगर पुताई न करै का होत तो हम कहे आइत? तुम बताओ, कित्ता दोगे?"

"अगर तुम माल सहित पुताई एक लाख रुपए में करो तो बताओ।"

"साहेब, तुम रहय देव। पुताई कराओब तुम्हरे बस के नहीं आय।"

प्रधानाचार्य महोदय फिर सभी शिक्षकों, बाबुओं की ओर मुखातिब हुए और कहने लगे-"मैं सोचता हूँ, पुताई रहने दूँ। कुछ ही दिनों में कालेज फिर वैसा का वैसा दिखने लगता है। आप लोगों की क्या राय है?"

"साहब मैं कहने वाला था कि कॉलेज की पुताई में पैसे बरबाद करना बेकार है। कालेज की पुताई न होने से कुछ प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप सही कह रहे हैं कि कुछ ही दिनों में कालेज फिर वैसा ही दिखने लगेगा।" लुकमान जी ने सलाह दी।

बड़े बाबू ने रईस से कहा अभी कालेज की पुताई नहीं करवानी है। जब कभी हिसाब बनेगा तो तुमको फिर याद किया जाएगा।

प्रधानाचार्य ने बड़े बाबू से कहा,"अबकी बार मेरी बहुत इच्छा थी कि कालेज की पुताई हो जाए।"

"ठीक है, सर आपकी इच्छा पूरी हो जाएगी।"

"कैसे पूरी हो जाएगी?"

"बस आप चेक पर साइन कर दीजिए, मैं एक लाख रुपए में ही पुताई करवा दूँगा।"

बाबू प्रधानाचार्य के पास पुताई के नाम पर एक लाख रुपए का चेक काटकर ले आए। प्रधानाचार्य ने उस पर साइन कर दिए। अगले दिन कालेज की विकास निधि से पुताई के नाम पर एक लाख रुपए निकाल लिए गए। बाबू ने कुछ रुपए अपने घर की पुताई के लिए रख लिए और शेष रुपए पूरी ईमानदारी के साथ प्रधानाचार्य को सौंप दिए।

०००